SECRETS OF KASHMIRI JYOTISHYA SHASTRA

CHAPTER - 1ST

SATISAR FOUNDATION (Regd.)

KASHMIRI PANCHANG
Issues and Speciality

Kashmiri Panchang also has some very special and distinct features which enliven us into our past as also guide us for future. Panchang therefore hosts information of important festivals, birth and nirvana days of important social figures from Kashmiri Pandit society, throws light on our rituals, provides information on weather and personal predictions.

Wonderful as it as, it tells us several other things and imbibes in us an amazing sense of unity and assimilates us into the mainstream Hinduism.

Satisar is committed to carrying forward the process of social and cultural rejuvenation among Kashmiri Pandits and we fervently hope that the Community will be benefited and educated through this researched piece of literature.We shall continue to bring out similar literature in future to make the process a continuous one.We are running out of time and are at a generational transition.We cannot wait hands down. Let us all join our dream of coming out of this transition and keep the flame of Batagi alive and kindled because Batagi signifies not only an ethos but represents a society-indestructible and invincible.

NAVRATRA AND NAVREH MUBARAK

Virendra Wangnoo
Hony,. Editor
9419192733

नव वर्ष आरम्भ
(थाल बरून विधि)

सतीसर (कशमीर) में पुरातन काल से रहने वाले कशमीरी पंडितो ने बड़े दुख झेले है और अब भी झेल रहे है। इस बीच अगर किसी ने हमारा साथ निभाया है तो वह है हमारे रीति–रिवाज व हमारे जीवन मूल्य :

कश्मीरी पंडितों में(आगम)पद्वति के अनुसार काल गणना करने का नियम है और हमारा नववर्ष तब आरम्भ होता है जब सूर्य तथा चंद्रमा लगभग 0 डिग्री से पर पहुँच जाते है इस दिन को "नवरेह" कहते है। नववर्ष प्रारम्भ करने की एक विशेष विधि है जो लगभग 6000 वर्षो से हमारे घरों में निभायी जा रही है। नीचे नववर्ष प्रारम्भ करने की विधि दी जा रही है कृपया इसका अनुसरण करे।

ॐ श्री भैरवी:– उवाच:– कृतार्थेस्मि. कृतार्थेस्मि श्रुता जन्मविधि प्रभो। इदांनी श्रोत्वमिश्चामि वर्षारम्भेविधिं वद .1. भैरव: उवाच:– श्रुणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानांहितकाम्यया। यत्कृत्वा मुच्यतेकष्टाद्वर्ष मध्ये सुखं भवेत् 2. चैत्रे मासि जगद ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि त्रिस्पृहा दिवसे कुर्याद्धितीय प्रतिपदिक:3. कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा मत्स्यरूप: कुमार्यन्च अवतीर्णो हरि: स्वयम् 4. संवत्सरस्य प्रति मां ये त्वा रात्र्युपारातो तेषामायुष्मतीं प्रजां रायरपोषेण संसृज: 5. ब्राह्मे मुहूर्ते पुरूषा: त्यजेन्निद्रामतद्रित:। पद्मं प्रातर्प्रबुद्ध हि श्रियते श्री गुणाश्रिय 6. नववर्षारम्भेप्रात पश्येत्धान्यादि पुस्तकम्कारणानं शक्ति सहितं. पुष्पं: दधिरक्षोटकान् 7. महीदानौ स्वेष्ट देवीं. पंचांग मुद्रिकातथा। तूष्णीयन्नं तु वै. लवणे. प्रात: पश्योत्तर तत: 8 भुक्ता वै दधि. सहितं पुत्र जायादिकंपिर्वत्। एवं त्रयोदश द्रव्य. पश्येत्वर्षारम्भे तत: 9. पश्चात्सर्वाक्षोटानि जलमध्ये

विसर्जयेत्। एवं ज्ञाता महादेवि नपश्येत्मृत देहिनाम् 10. यदा पश्येत्मृत देहं, प्रमादा त् अबुद्धि तोपिवा। आज्याहुतिं तदाकुर्यात् वेद मंत्रणेवैनरः 11. तस्मात्र्सव प्रयत्नेनतन पश्येत्ममृत देहिनाम। वर्ष मध्ये भवेत्कष्टं सर्वदाः दुष्टचेष्टक 12. इति गुह्यत्मं विधिं, मयाकथित भैरवी। यत्कृत्वा मुच्यतेपायाद्वर्ष मध्ये सुखं भवेत् 13. इति उमामहेश्वर संवादे प्रभाते नववर्षारम्भ दर्शन विधि रूद्रायामले तन्त्रं।

अर्थ :– श्री भैरवी बोली – हे प्रभो! आपके मुख से मैंने जन्मविधि का अमृतपान किया अब मेरी इच्छा के लिए नववर्ष आरम्भ करने की विधि सुनायें।

भैरवः– सुनो देवी लोगों के हितार्थ में तुमको यह सुनाता हूँ, इसके सुनने से सारा वर्ष सुखमय बनता है। चेत्र मास के प्रथम दिन ब्रह्मा ने सृष्टि रचना की है इस दिन यदि त्रिस्पृहा हो तो प्रथम दिन नवरात्रारम्भ करे तथा द्वतीय दिवस पर नववर्षारम्भ करें सत्य युग में चेत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को स्वयं भगवान विष्णु ने मत्स्य के रूप में अवतार धारण किया संवत्सर की प्रतिमा स्वरूप हम जिस प्रभु की उपासना करते है वह हमे दीर्घायु वाली प्रजा और धन से युक्त करें। ब्राह्म मुहूर्त में ही जितयेन्द्र पुरूष को निद्रा का त्याग कर नमस्कार करके प्रातः काल में ही इन वस्तुओं का दर्शन करना चाहिए।

1. धान्यादि Uncooked Rice, 2.पुस्तकम Book,
3. अक्षोटका -अखरोट (Walnut),
4.मसीदानै- मिलोनदुर - Inkpot/Pen
5. इष्ट देवी- Presiding Goddess,
6.पंचांग–जन्त्री (Calander),
7. मुद्रिका- रुपये (Rupee)/ gold ring
8. अन्न- भात्–Cooked Rice / रोटी,
9. लवण–नमक (Salt), 10. वै–वय् (Herb),
11.फूल– (Flowers) 12.दधिर–दहि (Curd)
13.कारणानं शक्ति सहिंत – लक्ष्मी–विष्णु, शिव–पार्वती

इन वस्तुओं के दर्शन करने के बाद वय के टुकडे कर दही के साथ मिलाकर परिवार के सारे सदस्य खाये तथा भात को चिड़ियों को डाले फिर फूलो व अखरोटों को नदी में विसर्जन करें फिर हे, महादेवी ज्ञानी जन मरे हुए शरीर को नहीं देखें, यदि प्रमाद व अबुद्धि के कारण किसी ने के दर्शन किये तो उन पुरुषों को मन्त्रोच्चारण के साथ हवन करना चाहिए। यदि ऐसा न करे तो सारा वर्ष कष्ट में बीतता है। हे भैरवी यह नव वर्ष की गुप्त विधि सब जनों को सुख देगी।
यह उमा महेश संवाद रुद्रायमल तन्त्रे के नववर्षरम्भ प्रकरण का है।

मलमास/भानुमास का विज्ञान

दक्ष मनवन्तर (Unit of Yugas) में अदिति के गर्भ (Super Fire Ball) से 13 प्रकार के सूर्य का जन्म हुआ। इनमें से 12 सूयो का जन्म हुआ और कालचक्र Cycle of Time का निर्माण हो गया इस कालचक्र मे 12 महीने 6 ऋतुऐ, रास्ते (उतरायन व दक्षिणायन) तथा चन्द्र का घटना व बढना है।

कहते है इन 13 सूर्य अण्डो में से एक अण्ड का प्रस्फूटन नहीं हो रहा था यह देखकर माता आदिति ने इस मृत अण्ड को सतीसर के अपार जलाशय में फेक दिया कई वर्षो के बाद जब ऋषि कष्यप ने सतीसर का जल बारामूला (वराह मूल) की पहाडीयो से निकास दिया तब यह अण्डा सबको दिखने लगा।

कश्यप ने इस अण्डे को देखा और पकडना चाहा उसका हाथ लगते ही अण्डा फूट कर महाज्वाला प्रकट कर गया जैसे धरती पर सूर्य आ गया हो और

इस प्रकार सूर्यदेव का प्रार्दुभाव हो गया। मृत अण्ड से निकलने के कारण इस स्थान का नाम **मार्तण्ड** पडा **(यानि सूर्यदेव का जन्मस्थान)**।

इस अण्ड से प्रकट हुई ज्वाला मार्तण्ड क्षेत्र के सामने वाली पहाडी से टकरा गई और ज्वाला का आकार उस पर्वत पर भी बन गया उस पहाडी को आज भी **भर्गशिखा** अर्थात सूर्य की जटा कहते है भर्ग सूर्य देव का एक नाम है इस स्थान पर करोडो सूर्या के समान प्रकाशमयी माता भर्गशिखा का अदभुत स्थान है।

यह मार्तण्ड क्षेत्र आजकल मटन और भवन के नाम से जाना जाता है यह अनन्तनाग से 6 मील दूर पूर्वोतर दिशा मे है।

कश्यप जी इस तेज पुञ्ज को देखकर हैरान हो गये तब ब्रह्मा जी ने उनको समझाया कि यह उसका अपना पुत्र है अब सभी देवता विचार करने लगे कि 12 सूर्य तो कालचक्र में एक-एक महीने का क्रम देख तो इस तेरहवे सूर्य को क्या काम दिया जाये ?

तब भगवान शंकर ने सुझाया कि सभी 12 सूर्य इस तेरहवे सूर्य के काल निर्धारण करेंगे।

सभी सूर्य एक निर्णय करते है कि एक दिन में 30 घडीयां होती है और सूर्य हर दिन इन 30 घडीयों को पार नही कर पाता है इस प्रकार हर दिन 1 घडी बचने से एक मास में एक दिन बच जाता है व एक वर्ष में 12 दिन बच जाते है जो कि 32 मास 16 दिन व 4 घडीयो के बाद एक सम्पूर्ण मास बन जाता है इसी को मलमास अथवा भानुमास कहते है

दिवस्य हरर्त्यक : षीष्टि भाग मृतो गतः
करोत्येकमहच्छेदं तथैवेच व चन्द्रमा

जब सूर्य के एक ही राशि अर्थात 30^0 में रहते हुए दो अमावास्याएँ आ जाएँ तो मानुमास कहलाता है जब दो अमावस्याओ के बीच मे ही दो संक्रातियाँ आ जाए क्षयमास कहलाता है।

इस सूक्ष्म गणित को कशमीर के महान पंडितो ने हजारो वर्षो से बचा कर रखा था यह पद्वति विज्ञान के

नवीनतम गणित से भी सूक्ष्म है यह विधि भारत की धरोहर है क्या हम इसको बचा पायेंगे ?

इन दोनो पद्धतियो को भारत के सभी वर्ग मानते है महर्षि गर्ग ने इसका विभाजन किया है कि :-

हिमालय-प्रदेशेऽपि यत्र कुत्रपि जन्मिन......
मले मासि प्रोक्ता देव्याधिकारिणाः
विन्ध्यार्त्पूमर्वाचलान्तं च दक्षिणान्तपाश्रिताः।
संभूताश्च मया प्रोक्ता भानु मासधिकारिणाः

अर्थात हिमालय के आस-पास रहने वाले मलमास तथा विन्ध्यपर्वत के दक्षिण में रहने वाले भानुमास के अधिकारी है

एक हजार वर्षो से कशमीरी पंडित कशमीर घाटी से निकाले जाने के पश्चात भी कई वर्षो भारत के विन्ध्याचल पर्वत के आस-पास रहकर अपनी घाटी में जब लौटकर गए तो विन्ध्यांचल के रीति रिवाज भी लाये थे इसी कारण कश्मीर के कई गोत्र मलमासी है व कई भानुमासी है **परंतु सभी गोत्र कश्मीर के मूल गोत्र है**

आगम ग्रन्थो में मल अथवा भानुमास के सूर्य का ध्यान इस प्रकार है :-

सव्ये खडाक्ष सूत्रा सकलश नलिनी जाहनवी
कूर्मवाहा वामे पाशाङशाडा मकर रथगता
सूर्यजा कुम्भहस्ता॥ धर्म्माधर्मों च पार्श्वे
अरुण रथ शशिनौ चक्षुप्पी दे च यस्य

सोऽयं मार्तण्डनाथो हरतु ब दुरितं भर्गरुपं नमामि।
13 सूर्यो के नाम व मास इस प्रकार है इनको ऋतुपति नारायण कहते है। हर एक पूजा प्रेप्युण में उस महीने के सूर्य व शक्ति का नाम लै।

मार्गशीर्ष रुकमणी सहिताय कृष्णाय
श्री सहिताय केशवाय।

पोष प्रिया सहिताय अनन्ताय,
वागीक्ष्वरी सहिताय नारायणाय।

माघे प्रीति सहिताय।
अच्युताय कान्ता सहिताय गोविन्दाय

चेत्रै सिध्दि सहिताय वैकुण्ठाय,

शक्ति सहिताय विष्णवे
वैशाखे श्री सहिताय जनार्दनाय,
विभूति सहिताय त्रिविक्रमाय
आषाढे लक्ष्मी सहिताय यज्ञपुरूषाय
प्रीति सहिताय वामनाय
श्रावणे कान्ति सहिताय वासुदेवाय,
रति सहिताय श्री धराय।
भाद्रपदे प्राप्ति सहितय हरये,
माया सहिताय हृषीकेशाय
अक्ष्युिजे प्राकाम्या सहिताय
योगीक्ष्वराय धी सहिताय पदमनाभाय ।।
कार्तिक लघिमा सहिताय पुण्डरीकाक्षाय,
महिमा सहिताय दामोराय
मलिम्लुचे शक्ति सहिताय योगीश्वराय,
सत्यभामा सहिताय नरकारये (मलमास में)
(अथवा)
भानौ छाया सहिताय सूर्याय, निष्कला सहिताय
महामार्तण्डनाथाय (भानोमास में)

इस मास में कोई भी महूर्त नही होता है तथा इस मास में पितृकार्य व अन्य धार्मिक कार्यों का आयोजन करना श्रेष्टकर है

यक्षेशे (क्ष्यचमांवस), षट् वक्त्रं (कुमार षष्ठी) दीप (दीपावली), विटकं (संकट निवारणी चतुर्थी), शकुनि (चेत्र प्रतिपदा शुद्धि) (नवरेह) लिङ्गं (शिवचर्तुदशी) राज्ञीन्ते सीता (तील् अष्टमी), गौरी (यक्षनीक्षतुर्थी, अमावस), सरस्वती मात्रिका (मौंजहोर ओकदोह) च पूर्वः तिथि श्राद्घावत् दर्शनीयां व श्राद्घवत अर्थनीयां। यदि उपरलिखित पर्वो की तिथि देवादेव हो तो वह पर्व श्राद्घ की भांति पहले दिन ही मनाया जाता है।

उदयात उदयति भानौ यां तिथि प्रतिपदयते
सः तिथि सकलांगनयंः संक्रातिपि व्रतः दिषो।

सक्रांति आदि सभी व्रतो का काल सूर्य उदय से दूसरे सूर्य उदय तक रहता है इसलिए एक सूर्य उदय से दूसरे देन के सूर्य उदय के बीच जिस समय भी सक्रांति आदि व्रतों की प्रवृष्टि हो तो उस सम्पूर्ण तिथि को ही व्रत धारण करना चाहिए।

Do not go by system of A.M / P.M)

Since the speed of Moon is variable and it can cross over the sun at any degree. New moon may sometimes occur twice in the same rashi or may not occur at all in some rasi (30^0). This gives formation of Adik or Kshay Months respectively. In case of Adik month the two months are named as first and other as second Shukla Paksh of the first and Krishna Paksh of the second are called Malmas which is normally avoided in most Muhurathas.

In case of Kshay month, one month is divided into 2 Pakshas and each month is assigned one paksh. The 1st month having Krishna Paksh is called क्षयमास and other the normal Month.

The Start of day is taken from sun rise. Because of variable moon's speed two thithies (तिथि) may fall between two sunrises and sometimes it may not fall even once.

This phenomena given rise to त्रिहः त्रिस्पृहः respectively i.e. loss of thithi & extension of Thitti.

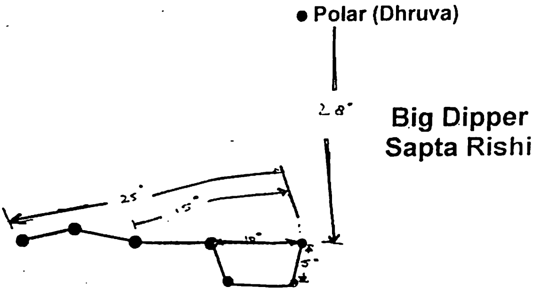

The मारीचि (Alkaid), वरिष्ट (Mizar) अङि.रस (Aloth) अत्रि (Megrez) पुलतस्य (Pheeda), पुलह (Merak) क्रतुः (Dubhe)

The seven rishis are the originators of Saptrishi calander of Kashmiri Pandits. They stay in an constellation for 100 yrs. This year we have entered into 5087th yr. of this calender.

वासवोत्तरदलादि पन्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम ।
प्रेतदाह तृण काष्ट सन्चयं शंम्यका वितरण विवर्जयेत ।
धनिष्ट नक्षत्र के उतरार्घ से रेवती तक पाँच नक्षत्रो को पंचक नक्षत्र कहते है

पंचक में दक्षिण यात्रा, लकडी का काम, चारपाई व चटाई, मृतदाह व मकान का छत इत्यादि डालना निषेध माना जाता है

सृष्टि के प्रारम्भ मे नक्षत्र मण्डल का निर्माण करने के समय ब्रह्मा जी ने चन्द्रमा के साथ अपनी 27 कन्याओ का विवाह किया था परन्तु इन कन्याओ मे 5 कन्याये चन्द्रमा के प्रति प्रेमभाव नही रखती इस कारण वे 5 नक्षत्र लकडी के डेर मे, एक दक्षिण दिशा मे, एक छत पर एक मतृदेह व चारपाई के किनारे छिप गये थे तब चन्द्रमा ने उनको शाप दिया कि इन पांचो नक्षत्रो में इन चीजो का व्यवहार करना निषेध रहेगा।

आज भी आकाश मण्डल में चन्द्रमा 27 नक्षत्रो से घिरा हुआ है (27 Constellation) तथा इन पाँच नक्षत्रो का आकार भी वैसा ही हे जैसा कहा गया है

तिथेः प्रान्ता प्राणा तु उपोझयं मुनयो विदुः।
प्रियं मूलं तिथेः इदं धर्मज्ञैः शास्त्रचिन्तकैः

किसी भी तिथि पर पितृकार्य पहले तथा देवकार्य बाद में करना शुभ माना जाता है जन्मदिन इत्यादि.देवकार्य है

मोदगल्यक्ष्च तथा धोम्यो दत्तात्रेयौमन्यवौ।
पालदेवो भारद्वाजः षडेते पूर्वभागिनः

मोगल्य, धौम्य, दतात्रेय, उपमण्यु, पालदेवो भारद्वाज गौत्र के अनुसार किसी भी पर्व दिन के दो दिन होने पर पहले दिन मनाते है

(In case of two days festival they celebrate it on the first day)

यदि किसी दिन प्रविष्ट है तथा अगले दिन दिवा हो तो अगले दिन वाले श्राद्व कर्म अगले दिन ही मनाये क्योकि अगले दिन प्रविष्ट का ही असर रहेगा।

आनन्देश्वर भैरव का ध्यान व मन्त्र

काश्मीरवास अमल भुजगेद्र हार शुक्लाम्बर सिमित मुख द्विभुजम वदनाम आन्नद कन्द अमरेश्वर पूजयेतम ।

आनन्देशराय विदमहि सुरादेव्य धीमहि
तन्न आन्देष्वरः प्रयोदयात्
उों ह्रीं श्रीं क्लीं हसरज्ञमलवय
ऊं आनन्देश्वर भैरवाय वोष्ट स्वाहा

पनन (साथ/महूत)

SEPTEMBER 2010

9th, 11th, 12th, 13th & Vinayak Chaturthi
Always Avoid Tuesday, Saturdays, Panchak Treha, Maasant, Sankrati but not in case of Vinayak Chaturthi.

कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वतीय अन्नपूर्णा दिवस

रक्तां विचित्रवसनं नव चन्द्र चूडाम
अन्न प्रदान निरतां स्तनभारनम्राम् ।

नृत्यन्तमिन्दुशकलाभरणं विलोक्य हृष्टां भजे
भगवतीं भवदुःख हर्त्रीम् ।

अन्नपूर्णाये विदमहि अष्टादशाज्ञयैः धीमहि
तन्नो अन्नपूर्णा प्रचोदयात्
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भगवती माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा

दीपदान महूर्त

21st Nov कार्तिक पूर्णिमा के दिन किसी मन्दिर में जहाँ तेल का दिया जलाते है आप भी तेल से युक्त दिये का दान कर सकते है ।

APPEAL

Satisar is committed to Print and Publish Literature of Our Cultural Ethos, Anyone who wants to be a part of this process can join the Parivar By Contributing in Terms of Physical Participation, Through Literature and Arranging Finances.

Howsoever the Literature and Services of Satisar will always remain priceless.

BE IT OUR SOCIAL CODE OF CONDUCT IN EXILE

Let this NAVREH bring in us a renewed resolve to strengthen our social order that would help us in preserving and promoting our age-old values, culture, tradition and our unique identity. Let we all Kashmiri pandit, spread far and wide, dispersed and in Exile, identify a small code that would see us emerge stronger, cohesive, vibrant and true followers of the unique tradition that has been passed on to us from our ancestors.

So, let it be our social code of conduct in exile.

Let us :

1. **Preserve and promote our language :**
   - ★ By conversing in Kashmiri with our children and encouraging them to learn speak and interact in Kashmiri
   - ★ By interacting and speaking with our fellow community brethren in Kashmiri
2. **Protect our Identity :**
   - ★ By Imbibing a sense of pride in our unique social, Cultural and spiritual tradition.
   - ★ By maintaining our age-old social marital order and promoting and encouraging marriages within the fold.
3. **Uphold our traditions :**
   - ★ By following the indigenous scientific Lunar calendar in observing rituals, festivals, special occasions etc.
   - ★ By celebrating birthdays, rituals, religious occasions and unique Kashmiri Pandit festivals.
4. **Strengthen our brotherhood**
   - ★ By expanding our social circle and
   - ★ By caring for each other. Mutual care is the only ray of hope for our SURVIVAL IN EXILE.
5. **Strengthen Socio-Cultural Institution :**
   - ★ Physically, Intellectually and financially, as these are pillars of our identity.

SATISAR FOUNDATION (Regd.)
Post Box No. 118
Head Post Office, Rani Talab, Jammu-180001 (J&K)
Correspondence
C/o: 32-E, Shankar Vihar, Talab Tillo, Jammu - 180002, J&K, INDIA
OR
C/o 181-A, Sector-2, Pamposh Colony, Janipur, Jammu 180007 J&K INDIA
E-mail : satisar2000@yahoo.com Visit us at : www.satisar org.
MOB. : 94191-13414, 94191-17251, 99061-82398, 94691-32249, 9469493100, 9419136545 TEL : 0191-2593948

DURGA PRINTING PRESS, OPP. DRUG CONTROLLER OFFICE, PATOLI CHOWK, JAMMU. MOB. : 094191-24691